it. *((Interruptions*) We will first find out ~" what is the basis.

श्री एस.एस. अहलुवालियाः मैडम, आज तो दूरदर्शन के लिए भेद किया गया, कल एनडी टीवी के लिए, आज तक के लिए और सब के लिए एक छेदा किया जाएगा । तो यह देखने की बात है ।...(व्यवधान).... सिस्टम, को बदलने की जरूरत है । वह तो अपने आपको लिबरेट करने जा रहे है आजाद होने जा रहे है । ज्यों ही वह आजाद होगा तब और भी ऐसे इलेक्ट्रोनिक मीडिया है, सब कहेंगे कि हम अपना कैमरा लगाएंगे । इस बात को भी ध्यान में अपना कैमरा लगाएंगे । इस बात को ध्यान में रखएगा ।...(**व्यवधान**)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: After whatever the Chair says, I do not think there is any need to discuss this matter till we get the report.*(Interruptions*)

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO (ANDHRA PRADESH): Madam, we fully appreciate the views expressed by you. I would only like to know, and I am sure the whole House would like to know whether these cameras are of doordarshan or whether ^-they are installed for security purpose.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I think, ' you came a little late and you did not hear the whole thing that I said. I will tell you. The parliamentary Affairs Minister, Smt. Jayanthi Natarajan, has said that they are Doordarshan Cameras. When she says it, I believe that they would be Doordarshan Cameras.

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO: Do we take this as a statement made by the Minister for Parliamentary Affairs Minister on the floor of the House?

THE DEPUTY CHAIRMAN: Naturally, if any statement is made on the floor of the House, it is a statement made on the floor of the House.

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: (उत्तर प्रदेश)**:** दूरदर्शन का अदूरदर्शितापूर्ण काम है ।...(**व्यवधान**)

THE DEPUTY CHAIRMAN: That is over. *(Interruptions*)

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: The IB has imposed these in all other Ministries and Departments. So, it could be that the IB holes are there in Information and Broadcasting. *(Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: I do not know if there are more perhaps. *(Interruptions*) There are a lot of holes over here.

RE: NEED TO BAN ARUN HOURIE'S BOOK ENTITLED 'FALSE GODS'

श्री अजीत जोगी (मध्य प्रदेश)**:** मैडम, एक बहुत ही घटिया मानसिकता के इंसान ने एक बहुत ही घटिया किताब लिखी, जो कल हमारे दूसरे सदन में फाड़ कर उस सदन के वैल में फेंकी गई । आज एस.सी.,एस.टी. का जो फोरम है एम.पीज. का, उसके सदस्यों के सामने आज उस किताब को विश्व-वंदनीय बाबा साहेब अम्बेडकर की प्रतिभा के सामने जलाया गया । मै किताब की ओर आपका, पूरे सदन का और सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । किताब का नाम है- "फाल्स गोड", और लेखक का नाम है अरूण शौरी । उन्होने यह डा. बाबा साहेब अम्बेडकर के बारे में लिखी है और यह सिद्ध करने की झूठी, असत्य कोशिश की है कि डा. बाबा साहेब अम्बेडकर राष्ट्रीय नही थे, राष्ट्र भावना से प्ररित नही थे उन्होने राष्ट्र की स्वतंत्रता के आंदोलन के लिए कुछ नही किया । एक ऐसी गलत बात इस किताब के माध्यम से उन्होने सिद्ध करने की कोशिश की है ।

महोदय, बहुत दिनों से हम दलितों के बारे में चर्चा कर रहे है और सब सहमत हुए है दलों की सीमाओं से ऊपर उठकर कि जिस तरह का माहौल देह्स में बनता है उस माहौल की परिणति हि ऐसी घटनाओं की तरफ ले जाती है । यह किताब इस तरह की किताब ऐसा माहौल बनाने में सहायक सिद्ध होती है । मैं यह मानता हूं कि जो घटना मुम्बई में हुई और अन्य स्थानों में हुई, ऐसी ही किताब को पढ़कर लोग आदरणीय बाबा साहेब अम्बेडकर के बारे में ऐसी बातें सोचते है ।

महोदया, मैं थोड़ा सा समय लेना चाहूंगा । जिन बाबा साहेब अम्बेडकर के बारे में अरूण शौरी ने ऐसी बातें लिखी है, उनके लिए देश के दूसरे महान नेताओं ने क्या कहा है, वह मैं यहा बताना चाहूंगा । आदरणीय गांधी जी ने कहा था - A patriot of sterling worth. Shri C. Rajagopalachari had said, A thoroughly upright person and a man with keen jurisprudence, proud and ir- reconcilable, with great learning and full

of friendliness. Shri Jawaharlal Nehru had said, 'A Symbol of revolt against all the oppressive features of Hindu society. He is a jewel in my Cabinet.' Dr. Ra-jendra Prasad had said, 'We could only make a decision which could be ever so right as when we put Dr. Ambedkar in the Drafting Committee and made him the Chairman. He has not only justified his selection but has added lustre to the work he has done.' Shri T.T. Krish-namachari had said, 'I have no doubt we are grateful to him for, having achieved this task in a manner which undoubtedly is commendable.

बहुत से लोगों ने बहुत सी बातें उनके बारे में कही है और यह घटिया मानसिकता के व्यक्ति ने ऐसी बातें उनके बारे में कही । मैंनें वह किताब पढ़ी है और बहुत आहत ह्रदय से यह बात कह रहा हूं । कि यह एक ऐसी मिसाल है देश में कि आउट आफ कान्टेक्सट क्वोट करके किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को किस तरह से नेस्तनाबूद किया जा सकता है, तो यह मिसाल यह किताब है । जो चीजें जिस संदर्भ में कही गई, जिस संदर्भ मे लिखि गई, उस सदर्भ में उनको न कहकर दूसरे संदर्भ मे प्रस्तुत करके एक ऐसे महान व्यक्ति को, जिसको इस देश के दलित और न केवल दलित बल्कि सारे देश के लोग पूजते है, पूरा देश इसको विश्व वंदनीय मानता है, प्रातः स्मरणीय मानता है, उसके व्यक्तित्व को इस तरह से खत्म करने की कोशिश की गई है । यह वही लेखक है जिसने एक समय में इस देश की अक्लियत को निशाना बनाया था और अब उसने इस देश के दलितों को अपना निशाना बनाया है । यह ऐसा लेखक है जो न जाने क्यों भारत के इस समाज को इन दीवारों में बांटकर तोड़ना चाहता है ।

इसलिए उपसभापति महोदया, आपके माध्यम से मै यह निवेदन करना चाहता हूं कि ऐसी घिनौनी और घटिया किताब को चलने नही देना चाहिये, उसको प्रतिबंधित किया जाना चाहिये, जहां-जहां वह है वहां से उसको जब्त कर लेना चाहिए और इस देश के नौजवानों को, नई पीढ़ी को यह किताब पढ़ने नही देनी चाहिये । एक बात जो गांधी जी ने उनके बारे में कही थी....

उपसभापति: अभी आपने काफी कह दिया, सारा सदन आपके साथ सहमत है ।

श्री अजीत जोगी: सरकार यहां बैठी हुई है, मै आपके माध्यम से सरकार आश्वासन चाहूंगा कि इस देश के 25 परसैंट लोगों की यह आवाज है, आओ कृपया इस किताब को प्रतिबंधित करने की घोषणा करिए ।

उपसभापति: सारा सदन आपके साथ सहमत है ।

कई माननीय सदस्य: हम आपके साथ सहमत है ।

श्री वसीम अहमद (उत्तर प्रदेश): मैडम, मै....

उपसभापति: बस हो गया ।...(**व्यवधान**)....It would not go on record if you would go on speaking like this. ...*(Interruptions)*... On an issue about which the whole House is concerned, it looks very bad if individuals like to go ahead of each other. It means the others do not feel that. Then they will also get up and I have to permit them. So, please have some dignity about a thing which is so serious. The Government is here. Mrs. Natarajan is here. She will convey to the Government the sentiments of the entire House, do not take such matters on individual lines or on party lines. Take it as a concern of the people's representatives.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF CIVIL AVIATION AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Madam, I fully share the anguish expressed by the hon. Members and the sentiments expressed by the Chair. It is a very serious matter. I would like to condemn it. I have not seen the book which Mr. Jogi and other hon. Members were referring to. 1 would like to condemn such a statement about a highly respected and cherished national leader like Dr. Ambedkar. I will convey the sentiments of the hon. Members to the Prime Minister and also to the Home Minister. I will also convey the sentiments of the Members that this book should be prescribed. I would request them on behalf of the House to take action as soon as possible.

THE DEPUTY CHAIRMAN: In fact, in the centenary year of Baba Saheb Ambedkar, a film is being commissioned by the Central Government and the

Committee oh his life and contribution to the Constitution. They approached us and the hon. Speaker to film it in the Central Hall of Parliament as well as to film a portion of our Chamber because Baba Saheb Ambedkar had never been a Member of the Lok Sabha. He was a Member of the Constituent Assembly as well as of the Rajya Sabha. The then hon. Chairman, who is the President now, asked me to look into this matter. He asked me to discuss this matter with them. I have taken a decision that for one time only, considering the importance of his contribution to the Constitu-ion and the value of the film which will depict how the Constitution was drafted, how it was argued at various points of time how every idea was put together in the sacred book by which all of us take oath, this film can either be taken here and the Chamber could be photographed, or they could be allowed to have a special stage or set only for one time. I have allowed it for one time only because we never allow any thing for any other leader. This is allowed only for one time out of our respect for Baba Saheb Ambedkar and the Constitution of India.

[**उपसभापति** (श्री अजीत जोगी): पीठासीन हुए]

RE: GOVERNMENT'S FAILURE TO HANDLE FERA VIOLATION CASES

श्री संजय निरूपम (महाराष्ट्र) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से इस देश में फेरा उल्लंघन के बढ़ रहे मामलों की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। महोदय, मामले बढ़ रहे है और इन मामलों क्ले निपटारे में सरकार फेल हो रही है। ये बहुत सारे मामले है। मै 2 मामलों का जिक्र करना चाहता हूं और एक मामले की डिटेल में जाना चाहता हूं। महोदय, इनमें एक तो आई.टी.सी. का मामला था और दूसरा टाईम्स ऑफ इंदिया और बैंनेट ऍंड कोलमैंन के मालिक अशोक जैंन का मामला था। महोदय, सच क्या है मुझे समझ में नही आ रहा है। महोदय, प्रवर्तन निदेशालय का कहना है कि उनके ऊपर राजनीतिक दबाव है और वे छानबीन नही कर पा रहे है। जब कि अशोक जैंन का कहना है कि उनके विरोधी प्रवर्तन निदेशालय के जरिए उनसे बदला लेना चाह रहे है। महोदय। मुझे सच कहना जानना है।.

महोदय, मै आपको यह बताते हुए खुश हूं कि मैंन 17 दिसंम्बर, 1996 को अशोक जैं से जुड़ा हुआ मुद्दा इस सदन में उठाया था। मेरा एक स्टार्ड क्वेश्वन आया था और मैंने वित्त मंत्री महोदय से 17 दिसंबर, 1996 को पूछा था कि क्या कोई फेरा वॉयोलेशन कसे अशोक जैं के खिलाफ लंबित है? अगर लंबित है तो क्या छानबीन की जा रही है? महोदय, वित्त मंत्री महोदय ने जवाब दिया कि यह मैटर सब-जुडिम है, इसलिए छानबीन रोक दी गई है, जब कि सच यह था कि 8 अक्टूबर, 1996 को कलकत्ता हाईकोर्ट ने निर्णय सुना दिया था कि यह मामला अब सब-जुडिस नही है और इसकी छानबीन सी.बी.आई. जैसी एजेंसी के थ्रू होनी चाहिये। महोदया, यह 17 दिसंबर, 1996 का सवाल था और 4 जनवरी, 1997 को मैंने एक अखबार में पढ़ा कि प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारियों ने श्री अशोक जैं के घर पर छापा मारा और उनसे पूछताछ की । मैंने वित्त मंत्री को खत लिखा कि या तो आप गलत है या प्रवर्तन निदेशालय गलत है। अगर मैटर सब-जुडिस है तो छानबीन क्यों हुई? अगर मैटर सब-जुडिम नही है तो आपने सदन को गुमराह क्यों किया? वित्त मंत्री का कोई जवाब नही आया। इस बीच श्री अशोक जैंन विदेश चले गए बीमारी के बहाने। हमारे यहां अक्सर लोग बीमारी के बहाने छानबीन से बचते रहते है। यह सत्य है। मैंने फिर चिट्ठी लिखि वित्त मंत्री को और पूछा कि क्या ऍसे तमाम अभियुक्तों को विदेश जाने दिया जाता है? क्या यह सुविधा तमाम फेरा अभियुक्तों को मिलेगी या मिलती रही है? मैंने पूछा कि अगर ऍसा है तो बाकी लोगों के पासपोर्ट क्यों जब्त किए जाते रहे है? वित्त मंत्री का जवाब नही आया। फिर मैंने उनके खिलाफ एक प्रिविलेज नोटिस दिया। उसका जवाब आया और उन्होने मुझे बताया कि हम इस मामले की छानबीन करेंगे। उसमे उन्होने बताया कि 17 दिंसबर को उन्होने राज्यसभा में इनका जवाब दिया है (समय की घंटी)। महोदय, मुझे थोड़ा विस्तार से बोलने का मौका दिया जाए।...(**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): जीरो ऑवर सबमिशन में विस्तार से नही बोलते, केवल ध्यान आकर्षित करने के लिए बोला जाता है। आप संक्षेप में बोलिए।

श्री संजय निरूपम: मै संक्षेप में बोल रहा हूं। वित्त मंत्री ने मुझे बताया कि 19 दिसंबर, 1996 को प्रवर्तन निदेशालय को कलकत्ता हाईकोर्ट के वर्डिक्त की ऑथैटिकेटेड कॉपी मिली। जब कि 23 दिसंबर, 1996 को